Resource: अध्ययन नोट्स (बिब्लिका)

License Information

अध्ययन नोट्स (बिब्लिका) (Hindi) is based on: Biblica Study Notes, Biblica Inc., 2023, which is licensed under a CC BY-SA 4.0 license.

This PDF version is provided under the same license.

अध्ययन नोट्स (बिब्लिका)

2PE

2 पतरस1:1–11, 2 पतरस1:12–21, 2 पतरस2:1–9, 2 पतरस2:10–22, 2 पतरस3:1–10, 2 पतरस3:11–18

2 पतरस 1:1–11

पतरस ने जिन विश्वासियों को लिखा, उन्होंने सुसमाचार का संदेश प्राप्त किया था।

उन्हें संसार की बुराई से बचाया गया था। परमेश्वर ने उन्हें यीशु के उदाहरण का पालन करने के लिए आवश्यक सभी साधन दिए थे।

वे एक धार्मिक और पवित्र जीवन जी सकते थे, जैसा कि यीशु ने जिया। इसके लिए उन्हें विश्वास में सीखते रहना और बढ़ते रहना आवश्यक था।

पतरस ने यह स्पष्ट किया कि इसमें प्रयास और कड़ी मेहनत की आवश्यकता थी। उन्होंने सात तरीके बताए जिनमें विश्वासियों को निरंतर बढ़ते रहना चाहिए। यह सूची (गलातियों 5:22–23) में पवित्र आत्मा के फल समान है।

जैसे-जैसे विश्वासी यीशु को अधिक से अधिक जानते हैं, वे उनके समान अधिक से अधिक बन जाते हैं। इसी प्रकार वे परमेश्वर के स्वभाव में सहभागी होते हैं। विश्वास में बढ़ने से विश्वासी उपयोगी बनते हैं जब यीशु का राज्य पृथ्वी पर फैलता है। यीशु का राज्य परमेश्वर का राज्य है।

2 पतरस 1:12–21

पतरस को विश्वास था कि वे शीघ्र ही मर जाएंगे। इसीलिए उनके लिए यह महत्वपूर्ण था कि वे विश्वासियों को यीशु के बारे में सच्चाई की याद दिलाएँ। उन्होंने दो तरीके समझाए जिनसे वे और अन्य प्रेरितों को यीशु के बारे में सत्य का ज्ञान था।

उनके लिए यह महत्वपूर्ण था कि वे विश्वासियों को यीशु के बारे में सत्य की याद दिलाएं। उन्होंने दो तरीकों की व्याख्या की जिनसे वे और अन्य प्रेरित सत्य को जानते थे।

पहला, वे उस समय यीशु के साथ थे जब वह पृथ्वी पर जीवन जी रहे थे और सेवा कर रहे थे। पतरस, याकूब और यूहन्ना ने यीशु की महिमा को एक विशेष रूप में देखा, जिसे दूसरों ने नहीं देखा था। उन्होंने इसे अपनी आँखों से उस पहाड़ पर देखा था जब वे यीशु के साथ थे (मत्ती 17:1–8)।

दूसरा, प्रेरितों ने समझा कि पुराने नियम में यीशु के बारे में कई भविष्यद्वाणियों थीं। भविष्यद्वक्ता ने ये शब्द नहीं बनाए थे। उन्होंने वे शब्द बोले थे जो पवित्र आत्मा ने उन्हें दिए थे। ये भविष्यद्वाणियों यीशु के जीवन में पूरी हुईं।

इनमें से एक बिलाम द्वारा बोला गया था। बिलाम ने याकूब की वंशावली से एक तारे के आने की बात की थी (गिनती 24:17)।

पतरस ने यीशु को भोर का तारा कहा। यह एक तरीका था यह बताने का कि यीशु संसार में परमेश्वर का प्रकाश लेकर आते हैं। पतरस ने कहा कि यीशु के लौटने तक संसार एक अंधकारमय स्थान रहेगा।

2 पतरस 2:1–9

पतरस ने विश्वासियों को चेतावनी दी कि वे उन शिक्षकों पर भरोसा न करें जो असत्य बातें सिखाते थे। झूठे शिक्षक विश्वासियों के लिए अच्छा नहीं चाहते थे। वे यीशु के अनुयायियों का लाभ उठाना चाहते थे।

पतरस ने स्पष्ट किया कि परमेश्वर उन्हें रोक देंगे और उनके विरुद्ध न्याय लाएंगे। उन्होंने पुराने नियम से तीन उदाहरण दिए। इन उदाहरणों ने दिखाया कि परमेश्वर जानते हैं कि दुष्ट आत्मिक प्राणियों का न्याय और दंड कैसे करना है।

यही बात भक्तिहीन लोगों के लिए भी सही है। उदाहरणों ने यह भी दिखाया कि परमेश्वर जानते हैं कि धर्मी लोगों की रक्षा कैसे करनी है।

2 पतरस 2:10–22

अध्याय 1 में, पतरस ने कुछ विश्वासियों के बारे में बात की। वे भूल गए थे कि उनके पिछले पापों (पाप) को धो दिए गए हैं।

पापों को धोना एक ऐसा तरीका है जिससे क्षमा प्राप्त करना समझाया जाता है। यहाँ पतरस ने इन विश्वासियों के बारे में

अधिक बात की। उन्होंने जानबूझकर पापपूर्ण इच्छाओं का अनुसरण किया।

इन विश्वासियों की मुख्य बात यह थी कि वे अधिकार के अधीन होना पसंद नहीं करते थे। वे नम्रतापूर्वक यीशु को अपने स्वामी के रूप में सेवा नहीं करना चाहते थे। वे केवल वही करने की स्वतंत्रता चाहते थे जो वे करना चाहते थे।

पतरस ने स्पष्ट किया कि यह वास्तविक स्वतंत्रता नहीं थी। यह केवल उन विश्वासियों को उनके पापपूर्ण इच्छाओं का दास बना रही थी, जो उन्हें नियंत्रित कर रही थीं। वे पाप को अपना स्वामी बनाकर उसकी सेवा कर रहे थे, बजाय इसके कि वे यीशु की सेवा करते। पतरस ने इन लोगों के विरुद्ध परमेश्वर के न्याय के बारे में स्पष्ट रूप से लिखा।

2 पतरस 3:1–10

यीशु ने पृथ्वी पर लौटने का वादा किया था। यीशु के पुनरुत्थान के कई वर्षों बाद, विश्वासियों को उम्मीद थी कि वे बहुत जल्द लौटेंगे।

फिर कुछ विश्वासियों ने संदेह करना शुरू किया कि क्या वह वापस आएंगे। कुछ लोगों ने विश्वासियों का मज़ाक उड़ाया कि वे यीशु के लौटने की बात करते हैं। पतरस ने समझाया कि परमेश्वर कार्य करने में धीमा नहीं है और न ही अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करने में असमर्थ है। बल्कि, वह धैर्यवान है। परमेश्वर चुनता है इंतज़ार करना। वह चाहता है कि लोग पश्चात्ताप करें और अपने पापों से मुड़ें। वह सभी को अपने पास लौटने का अवसर दे रहा है।

पतरस ने न्याय के दिन का वर्णन एक चोर की तरह किया। यीशु ने भी लूका 12:39 में इसी तरह बात की थी। पतरस ने परमेश्वर के न्याय का वर्णन अग्नि के रूप में किया, जो स्वर्ग और पृथ्वी को नष्ट कर देगी।

वह उस प्रकार की अग्नि की बात कर रहा था जो सोने को पिघलाती है और उसे शुद्ध करती है। मलाकी की पुस्तक भी इस प्रकार की अग्नि के बारे में बात करती है (मलाकी 3:1–3)। यह अग्नि स्वर्ग और पृथ्वी में सब कुछ जला देगी जो परमेश्वर के विरुद्ध है।

2 पतरस 3:11–18

पतरस ने विश्वासियों को बताया कि जब वे यीशु के लौटने की प्रतीक्षा कर रहे थे, तब उन्हें कैसे जीवन जीना चाहिए। उन्हें पवित्र जीवन जीना था। इसका अर्थ था कि उन्हें परमेश्वर के साथ शांति में रहना चाहिए।

इसमें झूठे शिक्षकों से दूर रहना शामिल था। इसके बजाय, उन्हें वही सच्ची शिक्षा को थामे रहना चाहिए जो पतरस और पौलुस ने सिखाई थी। पतरस की शिक्षाएँ पौलुस की शिक्षाओं से सहमत थीं।

पवित्र जीवन जीने का अर्थ था प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु को और अधिक जानना। तब विश्वासियों को प्रतिदिन परमेश्वर की अनुग्रह को और गहराई से अनुभव होगा।

विश्वासियों को इन सभी बातों को तब तक करना था जब तक वे यीशु के लौटने की प्रतीक्षा कर रहे थे। यीशु दुनिया को नष्ट करने नहीं आ रहे हैं, बल्कि न्याय करने और इसे शुद्ध करने आ रहे हैं। इसी कारण पतरस ने नए आकाश और नई पृथ्वी के बारे में बात की। वह नई सृष्टि के बारे में बात कर रहे थे। विश्वासियों को इस प्रतिज्ञा को पूरा होते देखने के लिए आशा और धैर्य के साथ प्रतीक्षा करनी चाहिए।

विश्वासियों को ये सब कार्य करने थे क्योंकि वे यीशु के लौटने की प्रतीक्षा कर रहे थे। यीशु संसार को नष्ट करने नहीं आ रहे हैं। वे इसका न्याय करने और इसे शुद्ध करने आ रहे हैं। यही कारण है कि पतरस ने नए आकाश और नई पृथ्वी की बात की। वे नई सृष्टि की बात कर रहे थे। विश्वासियों को इस वचन को पूरा करने के लिए परमेश्वर की प्रतीक्षा आशा और धैर्य के साथ करनी चाहिए।